Sawai Gandharva

Pandit Rambhau Kundgolkar, popularly known as Sawai Gandharva was born in Amminbhavi, a small village in Dharwad district of Karnataka on 18-1-1886. He lost his mother Smt. Saraswatibai when he was just 3 months old. Saraswatibai's elder sister, Smt. Tulasakka took infant Ramachandra under her care and nursed him.

At the age of 10 years, young Ramachandra happened to meet Ustad Abdul Karim Khan, the Pioneer of Kirana Gharana school of Hindustani classical music at Shrimant Ranganagouda Nadgir's Palatial house at Kundgol in Dharwad district. The Ustad listened to young Ramachandra's voice and is said to have exclaimed "Gala accha hai" meaning "voice is good". Shrimant Ranganagouda Nadgir requested the Ustad to teach Classical music to young Ramachandra. Ustad Abdul Karim Khan accepted the request and rigorously trained Ramachandra for the next 10 years.

After this training, Pt. Rambhau Kundgolkar toured and performed all over India and spread the sweetness of the Kirana Gharana school of music. He also set up his own drama company but, unfortunately, he was forced to shut it down due to heavy losses.

He once again returned to classical singing, but with a new vigour. His voice was very melodious, that combined with his rigorous training and mastery over voice control, he soon became very popular and was held in high regard. His singing career spanned almost half a century.

He performed before the Maharaja of Mysore Krishnaraja Wodeyar Nizam of Hyderabad, the Maharajas of Sangli, Kolhapur and Aundh etc., all of whom were impressed with his renderings and held him in high esteem.

In the year 1924, AICC meeting was held in Belgaum where Mahatma Gandhi was the President. Pt. Sawai Gandharva performed there and Gandhiji, impressed with the singing, honoured Panditji with khadi garland.

In 1929, the electrification of the main line between Mumbai and Pune was inaugurated by Sir Frederic Sykes, Governor of Bombay. The Governor had sent a special invitation to Pt Sawai Gandharva to perform before distinguished guests in Pune. The Governor was very happy to listen to Hindustani Classical music and honoured Pt Sawai Gandharva with a silver plate full of Victorian coins and exclaimed "What a great music, I have never listened to such divine music. Panditji did not allow me to change my posture for three hours and I got completely immersed in the music which is nothing but heavenly".

Pt. Sawai Gandharva was invited for the singing by the Secretary of Vijayanagar Empire Sixth Century Association. The luminaries present in the programme included the Maharaja of Mysore, Jnanpith awardee Dr. D R Bendre, Dr. V K Gokak, great historian Alur Venkatarao and others. Panditji's singing was responded to by a standing ovation.

Prince Dadasaheb Khaparde, Head of Varhad state bestowed the title of Sawai Gandharva upon Panditji.

In 1946, Bharat Ratna Pt Bhimsen Joshi arranged 'Ganda Bandhan' ceremony by his guru Pt Sawai Gandharva at Railway's North Institute of the Madras Southern Maratha Railway at Hubli in Karnataka. On this occasion, inspite of ill health, Pt Sawai Gandharva rendered Rag Jayajayawanti and Marathi abhangs.

Pandit Sawai Gandharva's disciples include, Padma Vibhushan Dr. Gangubai Hangal, Bharat Ratna Pt Bhimsen Joshi, Padma Bhushan Dr. Basavraj Rajguru, Padma Shri Feroze Dastur, Shrimant Nanasaheb Nadgir and Dr. Nanasaheb Deshpande.

The essence of the music of Sawai Gandharva was emotion and intellect. He never displayed virtuosity for his own sake, but concentrated on the spirit of his Ragas. His 'Asthaiji' revealed a leisurely pace and meticulous unfloding of musical notes. The quite unhurried progression punctuated by soft swara-alap and the gradual exploration of the different dimensions of the Raga framework was the hallmark of his performance. This made his repertoire pleasing and at the same time subtle to the listening ears. Sawai Gandharva Rambhau Kundgolkar breathed his last on 12th September 1951 at Pune.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Sawai Gandharva.

Credits:

Stamp/ FDC/ Brochure/ Cancellation Cachet : Smt. Nenu Gupta

Text : Referenced from the contents provided by the proponent

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts

सवाई गंधर्व
SAWAI GANDHARVA



विवरणिका
BROCHURE

सवाई गंधर्व

सवाई गंधर्व के नाम से सुविख्यात पंडित रामभाऊ कुंडगोलकर का जन्म 18 जनवरी, 1886 को कर्नाटक के धारवाड़ जिले के एक छोटे से गाँव अम्मिनभावि में हुआ। वे मात्र 03 माह के थे, जब उनकी माता श्रीमती सरस्वतीबाई का देहांत हो गया। सरस्वतीबाई की बड़ी बहन, श्रीमती तुलासक्का ने शिशु रामचंद्र को अपनी देखरेख में ले लिया और उनका पालन–पोषण किया।

10 वर्ष की आयु में, किशोर रामचंद्र की मुलाकात धारवाड़ जिले के कुंडगोल में श्रीमंत रंगनगौड़ा नाडगीर के भव्य निवासस्थान पर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के किराना घराना के अग्रणी उस्ताद, अब्दुल करीम खान से हुई। जब उस्ताद अब्दुल करीम खान ने किशोर रामचंद्र का गायन सुना तो बरबस ही उनके मुंह से निकला कि ''गला अच्छा है'' अर्थात ''आवाज सुरीली है''। श्रीमंत रंगनगौड़ा नाडगीर ने उस्ताद करीम खान से किशोर रामचंद्र को शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्रदान करने का अनुरोध किया। उस्ताद अब्दुल करीम खान ने अनुरोध स्वीकार कर लिया और अगले 10 वर्षों तक रामचंद्र को कड़ा प्रशिक्षण दिया।

इस प्रशिक्षण के बाद पंडित रामभाऊ कुंडगोलकर ने समस्त भारत में अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से किराना घराना के मधुर संगीत की मिठास घोली। उन्होंने एक नाट्य कंपनी की भी स्थापना की, लेकिन दुर्भाग्यवश, भारी हानि होने के चलते उन्हें इस कंपनी को बंद करना पड़ा।

इसके बाद, पंडित सवाई गंधर्व ने नए जोश के साथ एक बार पुनः शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में वापसी की। पंडित सवाई गंधर्व की आवाज अत्यंत मधुर थी और इस मधुरता में चार चाँद लगाता था – कड़े प्रशिक्षण से पाया उनका अपने सुरों पर नियंत्रण। गायकी के इन्हीं गुणों की बदौलत उन्होंने लोकप्रियता की बुलंदियां हासिल की और संगीत जगत के चमकते सितारे बन गए। पंडित जी ने लगभग आधी सदी तक गायकी की।

उन्होंने मैसूर के महाराजा कृष्णराजा वोडेयार, हैदराबाद के निजाम और सांगली, कोल्हापुर एवं औंध आदि के महाराजाओं के दरबार में प्रस्तुति दी। उन्होंने सभी को अपनी गायकी से मंत्रमुग्ध कर दिया और खूब सम्मान पाया।

1924 में, महात्मा गांधी की अध्यक्षता में बेलगाम में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक हुई। इस बैठक में पंडित सवाई गंधर्व ने अपनी गायकी प्रस्तुत की। गांधीजी उनकी गायकी से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने पंडितजी को सम्मानस्वरूप खादी की माला आदि भेंट की।

1929 में मुंबई और पुणे के बीच मेन रेल लाइन के विद्युतीकरण का बॉम्बे के गवर्नर, सर फ्रेडरिक साइक्स द्वारा उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर गवर्नर सर फ्रेडरिक द्वारा पंडित सवाई गंधर्व को पुणे में विशिष्ट अतिथियों के समक्ष प्रस्तुति हेतु विशेष निमंत्रण भेजा गया। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के स्वर, गवर्नर सर फ्रेडरिक को अत्यंत भाए और उन्होंने पंडित सवाई गंधर्व को सम्मानस्वरूप विक्टोरियन सिक्कों से भरी चांदी की प्लेट भेंट की और कहा ''आपकी गायकी वास्तव में महान है, मैंने ऐसा गायन आज तक नहीं सुना। पंडित जी के संगीत में मैं इस तरह डूब गया कि तीन घंटे तक हिला भी नहीं। वास्तव में आपकी गायकी दैवीय है।''

विजयनगर एम्पायर सिक्स्थ सेंचुरी एसोसिएशन के सचिव द्वारा पंडित सवाई गंधर्व को गायन के लिए आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में मौजूद दिग्गजों में मैसूर के महाराजा, ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता डॉ. डी. आर. बेंद्रे, डॉ. वी. के. गोकाक और महान इतिहासकार अलूर वेंकटराव एवं अन्य शामिल थे। पंडित जी की गायन प्रस्तुति के बाद सभी ने खड़े होकर उनका अभिनंदन किया।

वरहाद रियासत के प्रमुख प्रिंस दादासाहेब खापर्डे ने पंडित जी को सवाई गंधर्व की उपाधि प्रदान की।

1946 में, भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी ने कर्नाटक के हुबली में रेलवे के नार्थ इंस्टीटयूट ऑफ द मद्रास सदर्न मराठा रेलवे में अपने गुरु पंडित सवाई गंधर्व द्वारा 'गंडा बंधन' समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर पंडित सवाई गंधर्व ने अस्वस्थ होते हुए भी राग जयजयवंती तथा मराठी अभंगों की प्रस्तुति दी।

पंडित सवाई गंधर्व के शिष्यों में पद्म विभूषण डॉ. गंगूबाई हंगल, भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी, पद्म भूषण डॉ. बसवराज राजगुरु, पद्म श्री फिरोज दस्तूर, श्रीमंत नानासाहेब नाडगीर और डॉ. नानासाहेब देशपांडे जैसी महान हस्तियां शामिल हैं।

सवाई गंधर्व के गायन में भाव और प्रज्ञा की प्रधानता है। उन्होंने कभी भी ख्याति प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने कौशल का प्रदर्शन नहीं किया, बल्कि राग की मूल भावना पर ध्यान केंद्रित किया। उनके 'अष्टाईजी' में संगीत के सुर मद्धम लय में और अपनी पूरी बारीकी में खुलते थे। मुलायम स्वर और अलाप से सजी उनकी विलंबित गायकी रागों के विविध आयामों का अनावरण करती थी और यही उनकी संगीत प्रस्तुति की विशेषता भी थी। इससे उनकी कला सूक्ष्म होने के साथ–साथ अत्यंत मधुर भी बन जाती थी। सवाई गंधर्व रामभाऊ कुंडगोलकर ने 12 सितंबर, 1951 को पुणे में अंतिम सांस ली।

डाक विभाग, सवाई गंधर्व पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण: श्रीमती नीनू गुप्ता

विवरणिका / विरूपण कैशे

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	212350
Stamps Printed	:	212350
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00